(ख) एयर इंडिया ने भी वैसे ही एक्सकर्शन फेयर चालू कर दिये है।

(ग) प्रश्न नहीं उठता।

सोने का मूल्य कम करने के लिए सोने की बिक्री

980. श्री प्रसन्नराम जायसवाल : क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या रिजर्व बैंक द्वारा नीलाम से सोना बेचने का निर्णय इसलिए लिया गया था कि सोने की तस्करी रुक जाये ;

(ख) यदि हां, तो पहला नीलाम किस तारीख को हुआ, और उस तारीख को बम्बई के खुले बाजार में प्रति 10 ग्राम सोने का विक्रय मूल्य क्या था और नीलाम से बेचे गये प्रति 10 ग्राम सोने का औसत मूल्य क्या रहा और कितना सोना नीलाम किया गया ;

(ग) ऐसे नीलाम रिजर्व बैंक आफ इण्डिया द्वारा भिन्न-भिन्न तारीखों को किये गये और इन तारीखों को प्रति 10 ग्राम सोने का विक्रय मूल्य क्या था और बैंक ने खरीददारों को प्रति 10 ग्राम सोना कितने औसत मूल्य पर बेचा; और

(घ) यह ध्यान में रखते हुए कि सोने के मूल्य नहीं गिरे हैं क्या सोने के मूल्य में गिरावट लाने के लिए सोना बेचने का कोई ढंग सरकार के विचाराधीन है ?

वित्त मंत्री (श्री एच० एम० पटेल) : (क) सरकार की तरफ से भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा नीलामियों के माध्यम से सोना बेचने का फैसला सरकार द्वारा एक आर्थिक उपाय के रूप में किया गया जिससे विदेश से भारत में होने वाले सोने के तस्कर आयात की बुराई को रोकने के निमित्त निवारक उपायों को सुदृढ़ बनाया जा सके।

(ख) तथा (ग). इसका ब्यौरा नीचे दिया गया है :—

क्र० सं०	नीलामों की तारीख	बम्बई में सोने का मूल्य (रु० 10 ग्राम)	औसत मूल्य जिस पर सोना बेचा गया (रु० 10 ग्राम)	बेचे गये सोने की मात्रा (किलोग्राम में)
1	2	3	4	5
1	3-5-78	690	633	492.6
2	16-5-78	700	635	1559.4
3	31-5-78	666	636	1220.4
4	14-6-78	68 5	644	1501.9
5	28-6-78	673	646	1618.9
6	12-7-78	68 0	645	1520.4

(घ) : सोने के मूल्य में कमी लाना अथवा किसी विशेष स्तर पर सोने के मूल्य को स्थिर करना सरकार की स्वर्ण-बिक्री-नीति का लक्ष्य नहीं है। देश में जमा सोने का भण्डार पहले ही बहुत बड़ा है और सोने की मांग इतनी ज्यादा है कि सरकारी भण्डार से सोना निकाले जाने से सोने की कीमत पर कोई ज्यादा असर नहीं पड़ सकता है।

सोने के अन्तर्राष्ट्रीय मूल्यों में बढ़ती हुई प्रवृत्ति के बावजूद भी, सोना बेचने की कार्यवाही के शुरू होने के समय से भारत में सोने के मूल्यों में भी कमी आने की प्रवृत्ति दिखाई दी है।

यह उल्लेखनीय है कि नीलामियों के परिणामों की समीक्षा तथा प्राप्त किये गये अनुभव के आधार पर बिक्री के तरीकों में समय-समय पर परिवर्तन किये जा रहे हैं। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा की जाने वाली नीलामियों की अवधि के बीच में देश में चुने हुए केन्द्रों पर स्वर्णकारों को निर्धारित मूल्य पर सोने की बिक्री करने की एक योजना सरकार के विचाराधीन है।

निर्यात में कमी

981. **श्री अनन्तराम जायसवाल :** क्या वाणिज्य, नागरिक पूर्ति तथा सहकारिता मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि वित्तीय वर्ष 1976-77 के पहले नौ महीनों के दौरान निर्यात में हुई 27.2 प्रतिशत की वृद्धि की तुलना में गत वित्तीय वर्ष की इसी अवधि के दौरान निर्यात में केवल 8.2 प्रतिशत वृद्धि हुई है ?

(ख) यदि हां, तो वित्तीय वर्ष 1976-77 और 1977-78 में निर्यात की गई प्रत्येक वस्तु की पृथक-पृथक् मात्रा और कीमत कितनी-कितनी थी; और

(ग) निर्यात की जाने वाली वस्तुओं की कीमत में कमी के क्या कारण हैं और उन वस्तुओं के नाम क्या हैं जिनकी निर्यात की मात्रा में कमी हुई है और प्रत्येक मामले में कितनी कमी हुई है ?

वाणिज्य तथा नागरिक पूर्ति और सहकारिता मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री आरिफ बेग) : (क) जी हां, पहले नौ महीनों अर्थात् अप्रैल-दिसम्बर, 1977 के दौरान निर्यातों की वृद्धि दर 8.7 प्रतिशत थी। अप्रैल-दिसम्बर, 1976 के दौरान 30 प्रतिशत वृद्धि हुई थी।

(ख) एक सांख्यिकीय सारणी सभा पटल पर रख दी गई है। [ग्रन्थालय में रखी गई। देखिए संख्या एल टी 2435/78] जिसमें की 1976-77 तथा विगत वर्ष की उसी अवधि की तुलना में 1977-78 के पहले 8 महीनों के सम्बन्ध में प्रमुख मदों के निर्यात की मात्रा तथा मूल्य दिये गये हैं।

(ग) 1977-78 के दौरान निर्यात की वृद्धि इन बहुत से कारणों की वजह से धीमी रही थी, विकसित देशों में संरक्षणवाद की ओर बहती हुई प्रवृत्तियां, विश्व अर्थव्यवस्था में मंदी की स्थिति कायम रहना, निम्न इकाई मूल्य प्राप्ति, डालर के मूल्य में उतार चढ़ाव तथा कतिपय आम खपत की वस्तुओं के मामले में घरेलू आवश्यकताओं के हित में अपने निर्यातों को विनियमित करने की सरकार की सुविचारित नीति।

उपरोक्त किसी न किसी कारण की वजह से जिन प्रमुख मदों को उनके निर्यातों के मूल्य में भारी गिरावट उठानी पड़ी उनमें